Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 3, September 2024
ISSN: 2347-2979

भारत और चीन के मध्य बढ़ता सैन्य व सामरिक तनाव का विश्लेषण

श्रीमती शिल्पी तिवारी
शोध छात्रा (पी–एच.डी. राजनीतिविज्ञान)
डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय करगीरोड कोटा, जिला– बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. संध्या जायसवाल
शोध निर्देशक, प्राध्यापक राजनीतिविज्ञान
डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय करगीरोड कोटा, जिला– बिलासपुर (छ.ग.)

शोध सारांश (Abstract)–

एकदलीय एव साम्यवाद के उदयकाल से ही शीघ्र यह बात स्पष्ट हो गई थी कि चीन विश्व–महाशक्ति बनने एवं एशियाई नेतृत्व की महत्वकांक्षा पाले हुये है। अपनी इस लालसा को पूरा करने के लिए चीन के द्वारा साम्राज्यवाद, सीमा विस्तारवाद, व्यापारिक–आर्थिक प्रभुत्ववाद तथा कपटभरी विदेश नीति को अपना मुख्य हथियार अपनाया। माओत्से तुंग के नेत्तृत्व में 1 अक्टुबर 1949 को चीन में साम्यवादी सत्ता की स्थापना के पश्चात तीव्र गति से चीन का बहुमुखी विकास हुआ। परमाणु हथियारों के निर्माण से लेकर सामरिक, व्यापारिक एवं आर्थिक विकास, प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अभियान इत्यादि अनेक क्षेत्रों में चीन ने अपना दबदबा कायम किया। इसके इन्हीं सफलताओं के अभियान में शीघ्र–ही चीन अपने आपको विश्वमहाशक्ति एवं एशिया में प्रमुख शक्ति के रूप में देखने लगा। विश्वपटल पर अपने आपको स्थापित करने के लिए चीन ने हथियारों का विशाल जखीरा खड़ा किया। एशिया में लगभग सभी देशों के साथ तथा समुद्र में चीनी अतिक्रमण से विवाद उत्पन्न हुये। पड़ोसी देशों के आँतरिक, मामलों में हस्तक्षेप करना, सीमाविस्तारवाद तथा भारत को एशिया में अपना प्रमुख प्रतिद्वंद्वी मानते हुये, भारत को लगातार घेरने का प्रयास करना आदि ऐसे अनेक कारण हैं जिससे भारत और चीन के मध्य लगातार सैन्य एवं सामरिक तनाव बढ़ते गया।

शब्दकुंजी (keyword)– सैन्य हथियारों का एकत्रीकरण, एशिया में तनाव, चीन का एशिया में वर्चस्व की रणनीति, प्रभुत्व की लालसा।

प्रस्तावना– Introduction–

एशियाई क्षेत्र में सामरिक, आर्थिक एवं व्यापारिक प्रभुत्व स्थापित करना चीन का प्रमुख लक्ष्य रहा है। एशिया में शांति तथा चीन से मित्रता हेतु भारत के द्वारा सदैव प्रयास किया गया। माओवादी चीन को विश्व समुदाय से जोड़ने, चीन के अंतर्राष्ट्रीय अलगाव को समाप्त करने, संयुक्त राष्ट्र संघ में मान्यता दिलाने तथा सुरक्षा परिषद् मे विशेषाधिकार (वीटो दिलाने) में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। किंतु चीन के द्वारा भारत के इन कार्यों को कभी महत्व नहीं दिया गया, बल्कि चीन ने सर्वप्रथम तिब्बत पर आक्रमण कर कब्जा किया गया तथा भारतीय सीमाओं की सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती पेश की गई। इतना ही नहीं

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 3, September 2024
ISSN: 2347-2979

भारत की सीमाओं पर अतिक्रमण करते हुए 1962 में अप्रत्याशित युद्ध भारत पर थोप दिया तथा हजारों वर्ग किलोमीटर भारतीय भू–भाग पर कब्जा कर लिया। इस अप्रत्याशित युद्ध में भारत की पराजय हुई। किंतु भारत, चीन के प्रति सावधान हो गया एवं परमाणु परीक्षण, परमाणु हथियारों के निर्माण तथा सैन्य व सामरिक विस्तार हेतु आवश्यक कदम उठाये। एशियाई क्षेत्र में चीन द्वारा अपने व्यापारिक एवं आर्थिक प्रमुख के लिये लगातार कूटनीतिक चालें चली गई तथा बार–बार भारत एवं अन्य पड़ोसी देशों के साथ सीमा विवाद उत्पन्न करते रहा। सामुद्रिक व्यापारिक मार्गों पर भी चीन ने अपना एकाधिकार बढ़ाया। चीन के द्वारा हिन्द महासागर तक पहुँच बनाने के लिए पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह को विकसीत कर रहा है।

चीन, भारत की सीमाओं पर लगातार सैन्य गतिविधियाँ जारी रखता है। सामरिक दृष्टिकोण से भारत की सीमाओं पर सैन्य चौकियों का निर्माण, सड़क निर्माण, हैलीपेड बनाना तथा घातक मिसाइलों की तैनाती करने के कारण भारत को अपनी सुरक्षा के दृष्टीकोण से सैन्य तथा सामरिक दृष्टीकोण से मजबूती आवश्यक हो गया। फलतः भारत के द्वारा भी सैन्य एवं सामरिक विस्तार किया गया। जिसके कारण दोनों देशों के बीच लगातार सैन्य व सामरिक तनाव बढ़ता जा रहा है। चीन के द्वारा भारतीय सीमाओं के आसपास लड़ाकू विमान उड़ाने, युद्धाभ्यास करने, घातक एवं लम्बी दूरी की मिसाइल निर्माण करने तथा पड़ोसी देशों को कर्जजाल की नीति में फंसाकर उन्हें भारत के विरूद्ध भड़काने एवं सैन्य हथियार प्रदान करने के कारण दोनों देशों के बीच सैन्य एवं सामरिक तनाव और अधिक बढ़ गया है।

शोध प्रविधि (Research Tools)–

इस लेख हेतु शोध प्रविधि के रूप में तथ्य संकलन के लिए द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया गया। द्वितीयक स्त्रोतों के अंतर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, टी.व्ही. समाचार, लेखकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों एवं तात्कालीन घट रही घटनाओं पर यह शोध लेख आधारित है।

अध्ययन के उद्देश्य (Object of study)–

प्रस्तुत शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य है–

- चीन की सीमा विस्तारवादी नीति को सामने लाना।
- चीन के द्वारा एशिया में तनाव उत्पन्न करना।
- अपने आप को एशिया एवं विश्व में महाशक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए सैन्य एवं सामरिक गतिविधियों को गढ़ावा देने से उत्पन्न तनाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना (Research Hypothesis)–

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रमुख परिकल्पनाएँ हैं–

- चीन द्वारा अपने आप को एशिया एवं विश्व महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करने लिए भारत और अमेरिका को लगातार चुनौती दी जा रही है।
- चीन की सीमा विस्तारवादी नीति तथा व्यापारिक आर्थिक प्रभुत्व नीति के कारण एशिया में तनाव व्याप्त है।
- भारत और चीन के बीच सैन्य एवं सामरिक गतिविधियों में तेजी के कारण एशिया में शांति भंग की स्थिति निर्मित है।

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 3, September 2024
ISSN: 2347-2979

शोध व्याख्या (Research Discription)–

चीन के द्वारा बड़े आक्रमक रूख के कारण भारत सहित पूरे एशिया में तनाव है। ताइवान के मुद्दे पर चीन अमेरिका के सामने बार–बार चुनौती पेश कर रहा है, जो एशिया ही नहीं अपितु पूरे विश्व की सुरक्षा के लिए खतरा है। चीन के द्वारा लगातार सैन्य एवं सामरिक हथियारों में वृद्धि तथा भारत के पड़ोसी राष्ट्रों के आर्थिक एवं सैन्य सहायता देने से भी भारत सुरक्षागत् कारणों से चिंतित रहता है, क्योंकि दोनों देशों के बीच लगातार सैन्य एवं सामरिक तनाव बढ़ते जा रहा है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि चीन द्वारा किये जाने वाले कृत्यों से भारत सहित पूरे एशिया में तनाव की स्थिति निर्मित है। दोनों देशों के बीच सैन्य एवं सामरिक गतिविधियों में तेजी आई है। विश्व युद्ध की संभावनाओं को और अधिक बढ़ावा मिला है। महाशक्ति बनने की चीनी महत्वाकांक्षा में एशिया के व्यापारिक, आर्थिक, साम्राज्यवाद तथा सामरिक गतिविधियों में तेजी ला दी है।

सुझाव (Suggestion)–

मानवता की रक्षा तथा विश्व शांति के लिए एवं संभावित तृतीय विश्व युद्ध को रोकना नितांत आवश्यक है, इस हेतु भारत के साथ–साथ चीन भी हमेशा अहम भूमिका निभा सकता है। चीन को अपने पड़ोसी राष्ट्रों विशेषकर भारत के साथ सीमा सहित अन्य विवादों को शांति वार्ता से ही सुलझाना चाहिये तथा सैन्य एवं सामरिक गतिविधियों तथा नवीन युद्ध हथियारों के निर्माण में कमी लाना चाहिये। इससे एशिया में शांतिपूर्ण माहौल का निर्माण होगा।

संदर्भ ग्रंथ (Reference)–

1. यादव, आर.एस. 2013. भारत की विदेश नीति, पियरसन एजुकेशनल प्रकाशन इंडिया, न्यू दिल्ली.
2. भारद्वाज, प्रवीण. 2016. बींसवीं सदी में भारत–चीन संबंध, जेननेक्ट प्रकाशन, मुम्बई.
3. सिकरी, राजीव. 2017. भारत की विदेश नीति चुनौती और रणनीति, सेज प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. वैदिक, वेद प्रताप. 2017. मोदी की विदेश नीति, डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली.
5. इंडिया टुडे, पत्रिका, 01 जुलाई 2020, बस बहुत हुआ.
6. इंडिया टुडे, पत्रिका, 27 जुलाई 2020, रीसेटिंग इंडिया चाइना पॉलिसी.
7. दैनिक भास्कर, समाचार पत्र, बिलासपुर, 01 अगस्त 2021.
8. दैनिक भास्कर, समाचार पत्र, बिलासपुर, 13 अगस्त 2022.